EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 9, Issue 1, January-June, 2020, Impact Factor: 5.905, Available online at: www.eduzonejournal.com

शिक्षक के लिए उचित व्यावसायिक विकास की आवश्यकता एवं चुनौतियाँ

डॉ. वंदना रानी

सहायक प्रोफैसर, नैशनल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, सिरसा

शोध आलेख सार

शिक्षक शिक्षा से संबंधित किसी भी प्रक्रिया या कार्य में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चूंकि युवा पीढ़ी एक राष्ट्र का भविष्य है और कक्षा में एक राष्ट्र की नियति को आकार दिया जा रहा है और ये भाग्य निर्माता शिक्षक है। इसलिए छात्रों को मूल्यवान शिक्षा प्रदान करना शिक्षक का मुख्य दायित्व है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, शिक्षक के लिए उचित व्यावसायिक विकास की आवश्यकता है। व्यावसायिक विकास एक उपकरण या संसाधन है जिसके माध्यम से एक शिक्षक शिक्षण सीखने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए अपनी क्षमताओं और कौशल में सुधार कर सकता है। इसके लिए विभिन्न सेवापूर्व और सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम पर्याप्त रूप में उपलब्ध हैं, जैसे कि डीएल.एड.टी, बी.एड., एम.एड., कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ तथा सम्मेलन आदि। ये कार्यक्रम एक शिक्षक को अपने शिक्षण को प्रभावी और प्रभावशाली और संस्थान बनाने में सहायता कर सकते हैं और यह संस्थान छात्रों से वांछनीय शैक्षिक उपलब्धियां प्राप्त कर सकता है। शिक्षक छात्रों के बीच नवीनतम ज्ञान प्रदान करके पिछले ज्ञान के साथ नए ज्ञान को आत्मसात की क्षमता भी विकसित कर सकते हैं। वर्तमान शोध–पत्र व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता और चुनोतियों पर ध्यान केंद्रित करता है।

मुख्य शब्द : व्यावसायिक, शिक्षक, शिक्षा।

परिचय :

व्यावसायिक दुनिया में लगातार बदलाव आ रहा है और प्रतिस्पर्धा निरंतर बढ़ रही है, इसलिए कैरियर की प्रगति की तुलना में व्यावसायिक विकास अधिक महत्त्वपूर्ण है। व्यावसायिकता काम के प्रति दृष्टिकोण के बारे में है अर्थात् समर्पण, ईमानदारी आदि के बारे में और व्यावसायिक विकास किसी के अपने पेशे में वृद्धि और विकास के लिए है। आमतौर पर, यह नए कौशल, अनुभव, ज्ञान प्राप्त करने के लिए संदर्भित करता है जो व्यावसायिक रूप से बढ़ने में मदद कर सकता है। इसके लिए बहुत सारे शिक्षकों शिक्षा कार्यक्रम सरकार द्वारा तैयार किए गए हैं। भारत में शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है अर्थात् सेवाकालीन और सेवापूर्व में। प्री–सर्विस कार्यक्रम वे हैं जो किसी भी सेवा के लिए अनिवार्य हैं या जो नौकरी प्राप्त करने के लिए न्यूनतम मानदंडों को पूरा करता है। लेकिन शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए सेवाकालीन शिक्षक कार्यक्रमों पर विचार किया जाता है। ये ऐसे कार्यक्रमहैं जिनमें एक सेवारत शिक्षक अपने व्यावसायिक कौशल, ज्ञान और दक्षताओं को उन्नत करने के लिए भाग ले सकता है। अतः इसमें शिक्षकों को उन्नत करने के लिए दी जाने वाली सभी प्रकार की शिक्षा व प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं जैसे –संगोष्ठी, कार्यशालाएं, सम्मेलन, संकाय विकास कार्यक्रम आदि।

व्यावसायिक विकास की आवश्यकता

कौशल विकास के लिए :आज का युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग है और शिक्षण और सीखने में दिन–प्रतिदिन नए कौशल विकसित किए जा रहे हैं। शिक्षक में विभिन्न कौशल के विकास के लिए विभिन्न व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता होनी चाहिए। ये कार्यक्रम उन्हें अपने समय की बेहतर योजना बनाने और व्यवस्थित रहने में मदद कर सकते हैं। व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के माध्यम से एक शिक्षक कठिन कौशल और सोफ्ट कौशल दोनों को बढ़ा सकता है। कठिन कौशल का अर्थ है जो संस्था से संबंधित है अर्थात् यह शिक्षण रणनीतियों, शिक्षण विधि, दृष्टिकोण, अध्यापन आदि से संबंधित है। जबकि सोफ्ट कौशल व्यक्तिगत विकास से संबंधित है जैसे संचार कौशल, अन्य सहयोगियों और छात्रों के साथ व्यवहार करना आदि।

निर्देशों में सुधार :व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के माध्यम से, शिक्षक निर्देश के नए विचारों को खोज और सीख सकते हैं और उन्हें बेहतर परिणाम के लिए अपने कक्षा में लागू कर सकते हैं। ये कार्यक्रम एक शिक्षक को छात्रों के लिए प्रासंगिक और सार्थक निर्देश बनाने के लिए स्वयं को सशक्त बनाने में मदद करते हैं, जो उनके शिक्षण को प्रभावी बनाता है।

नए ज्ञान का अनुकूलन : शिक्षा एक सतत विकसित होने वाला क्षेत्र है और यह सुनिश्चित करने के लिए कि इस विकास के लिए शिक्षकों को इसके साथ भी होना चाहिए। हर दिन नई खोजें होती हैं, नई जानकारी हमारे ज्ञान के लिए नई विधियों और रणनीति को उठा रही हैं और शिक्षक का कर्त्तव्य है वह ज्ञान को समझकर अपने छात्रों के सामने प्रस्तुत करे है और यह केवल तभी संभव होगा जब शिक्षक स्वयं को अद्यतित रखता है।

नई विधियों और रणनीतियों को चुनना : नई रणनीति और शिक्षण सीखने की प्रक्रिया के दृष्टिकोण के कार्यान्वयन के लिए वर्तमान शिक्षा की आवश्यकता है, इसलिए यह नई तकनीक, विधि, दृष्टिकोण और रणनीतियों के बारे में जानने के लिए शिक्षक को अवसर प्रदान करना संस्थान की जिम्मेदारी है।

नई तकनीक का उपयोग : शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में नई तकनीक का उपयोग करना समय की आवश्यकता है। जैसे कि हम जानते हैं कोविड–19 भौतिक कक्षा शिक्षण के दौरान डिजिटल प्लेटफार्मों को मजबूती से स्थापित किया गया था। जूम, स्ट्रीम यार्ड, यू टयूब, गूगल क्लासरूम इत्यादि विभिन्न ऑनलाइन एप्लिकेशन का उपयोग छात्रों से जुड़ने और उन्हें शिक्षा प्रदान करने के लिए किया जाता था। यह केवल तकनीक के ज्ञान के साथ ही संभव था। यह ज्ञान विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा प्रदान किया जाता है।

शिक्षण अधिगम सामग्री विकसित करने के लिए : शिक्षक अक्सर शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न शिक्षण सामग्री का उपयोग करते हैं और विभिन्न शोधों ने यह भी साबित किया है कि नई शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग से शिक्षा की समग्र प्रणाली में विकास किया है। इस प्रकार एक शिक्षक को विभिन्न कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और सम्मेलनों के माध्यम से शिक्षण अधिगम की सामग्री में नए नवाचारों के बारे में ज्ञान होना चाहिए।

करियर में उन्नति के लिए : यह किसी व्यक्ति को अपने करियर की प्रगति के लिए और अधिक अवसर प्राप्त करने में मदद कर सकता है। नए कौशल, क्षमताएं पारंपरिक शिक्षक की तुलना में एक शिक्षक के बीच एक बेहतर क्षमता विकसित करते हैं। इसलिए ये कार्यक्रम शिक्षक के लिए उपलब्धियों के नए द्वार खोलते हैं।

आत्मविश्वास बढ़ाता है : व्यावसायिक विकास एक शिक्षक के आत्मविश्वास में सुधार कर सकता है। नए कौशल सीखना एक शिक्षक को अधिक आत्मविश्वासी और सहज बना सकता है।

संस्थान में चुनौतियों का निर्माण करने के लिए : एक शिक्षक शिक्षण तकनीकों में नवाचार करके और शिक्षण अवधारणाओं में नई तकनीक को एकीकृत करके चुनौतियों का निर्माण कर सकता है। इन चुनौतियों के माध्यम से वे अपने छात्रों की क्षमताओं के बारे में जानकर उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित कर सकते हैं।

व्यावसायिक विकास के लिए कार्यक्रम

- **संगोष्ठी और सम्मेलन** : संगोष्ठियाँ और सम्मेलन व्यावसायिक विकास के लिए अच्छे स्रोत हैं। ये किसी विशेष क्षेत्र या शिक्षक के बीच विषय से संबंधित एक विशेष कौशल विकसित करने के लिए एक स्पष्ट उद्देश्य के साथ आयोजित किए जाते हैं। इन्हें संस्थान स्तर, राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया जा सकता है जिसमें किसी विशेष विषय पर चर्चा होती है।
- **कार्यशालाएं :** ये एक स्पष्ट उद्देश्य और सीखने के परिणामों के साथ आयोजित की जाती है। लेकिन कार्यशालाओं में सेमिनार में होने वाले विचार–विमर्श को कुछ ठोस आयाम दिया जाता है और प्रतिभागियों के समूहों के बीच काम सौंपकर विचारों का आदान–प्रदान होता है। यह संगोष्ठियों की तुलना में अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण है।
- **स्कूल कार्यक्रम** : शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए स्कूल स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। शिक्षकों को शैक्षिक मेला, प्रदर्शनियों, विस्तार व्याख्यान आदि में भी भाग लेना चाहिए।
- **प्रशिक्षण कार्यक्रम** : विभिन्न सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को राज्य और केन्द्र शिक्षा संस्थानों जैसे संस्थानों को एनसीईआरटी, डीएचई इत्यादि और अन्य द्वारा शिक्षा से संबंधित विभिन्न कौशल के अधिग्रहण के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए व्यवस्थित किया जाता है। शिक्षक इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों जैसे संसाधन उपयोग प्रशिक्षण, प्रयोगशालाओं की व्यवस्था, क्लब और पुस्तकालय, शिक्षण सहायक सामग्री आदि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त कर सकते हैं।
- **उच्च अध्ययन** : अध्ययन के क्षेत्र में उच्च अध्ययन भी उनके व्यावसायिक विकास में शामिल हो सकते हैं। जैसे स्नातक डिग्री धारक मास्टर की डिग्री कर सकते हैं और मास्टर डिग्री धारक अनुसंधान कार्य कर सकते हैं। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए विभिन्न मुक्त विश्वविद्यालय उपलब्ध हैं ताकि एक सेवारत शिक्षक अपनी नौकरी के साथ–साथ उच्च अध्ययन कर सकें और व्यावसायिक विकास में वृद्धि के लिए सेवाकालीन शिक्षकों के लिए अध्ययन अवकाश का प्रावधान है।
- **व्यावसायिक लेखन** : एक शिक्षक पेशेवर लेखों के माध्यम से अपने व्यावसायिक विकास में सुधार कर सकता है जैसे पत्रिकाओं, समाचार पत्रों के लेख और पुस्तकों आदि के लिए लेखन दूसरी ओर वह अपने संचार कौशल में सुधार कर सकते हैं और अन्य शिक्षकों या विशेषज्ञों के लेखों और लेखों के साथ खुद को समृद्ध कर सकते हैं।

- **प्रयोग और क्रिया अनुसंधान** : विभिन्न प्रयोगों और शोध के माध्यम से शिक्षक संस्थान की समस्याओं को हल कर सकते हैं और कक्षा में शिक्षण रणनीतियों, शिक्षण विधियों और शिक्षण सामग्री में नए नवाचारों को समझने और लागू करने का प्रयास कर सकते हैं। क्रियात्मक शोध एक शिक्षक को जमीनी स्तर पर समस्याओं को समझने में मदद करता है।

- **अभिविन्यास और रिफ्रेशर पाठ्यक्रम** : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर सेवारत शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार के लिए अस्तित्व में आया। कॉलेज स्तर पर शिक्षाशास्त्र, शैक्षिक मनोविज्ञान, दर्शन, राजनीतिक स्थिति और सामाजिक–आर्थिक चिंता में विभिन्न अभिविन्यास कार्यक्रम समय–समय पर आयोजित किए जाते हैं। प्रत्येक शिक्षक के लिए प्रत्येक तीन से पांच वर्षों में कम–से–कम एक बार अभिविन्यास/रिफ्रेशर कोर्स में भाग लेना जरूरी है।

- **चुनौतियां :**
  - **संसाधनों की कमी** : वित्त किसी भी कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेषज्ञों की नियुक्ति, नई तकनीक आधारित सहायता, उचित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के खर्च उचित राशि के बिना संभव नहीं है।
  - **विशेषज्ञों की कमी** : कुशल, सक्षम और योग्य विशेषज्ञों को सेवाकालीन शिक्षक कार्यक्रमों का संचालन करने की आवश्यकता होती है, जो बड़े पैमाने पर संभव नहीं है।
  - **समय की कमी** : शिक्षकों के पास अपने व्यस्त कार्यक्रम के साथ इन कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए उचित समय नहीं होता है। कभी–कभी, संकाय सदस्यों की कमी के कारण उच्च अधिकारी अपने कर्मचारियों को अपने कामकाजी घंटों में इसमें शामिल होने की अनुमति नहीं देता है।
  - **बहुत महंगा** : संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संचालन के लिए जनशक्ति, ऊर्जा और धन के रूप में बहुत अधिक व्यय की आवश्यकता होती है। इसी तरह प्रतिभागियों को भागीदारी के लिए शुल्क का भुगतान करना अनिवार्य है।
  - **रुचि की कमी** : अधिक आयु वाले शिक्षक जो अपनी सेवानिवृत्ति के नजदीक हैं, वे किसी भी प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों, शोध लेखन आदि पर ध्यान नहीं देते और कभी–कभी वे अपने जूनियर कर्मचारियों को संचालन करने और इस तरह की गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति नहीं देते हैं।
  - **प्रोत्साहन की कमी** : व्यावसायिक विकास कार्यक्रम बहुत महंगा है। यदि कोई शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में भाग लेता है, तो यह उनके व्यक्तिगत विकास के साथ–साथ संस्थान के लिए भी फायदेमंद होता है। इसलिए विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए फंड या प्रोत्साहन प्रदान करना संस्थान की जिम्मेदारी है।
  - **आलोचनात्मक विश्लेषण और अनुसंधान का अभाव** : शिक्षा वह क्षेत्र है जो हर दूसरी धारा से संबंधित है। शिक्षा की मदद से, हम विभिन्न क्षेत्रों में अच्छी उपलब्धियों के लिए विभिन्न नीतियों को तैयार कर सकते हैं। इसके लिएशिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, स्कूल छोड़ने के कारण, शिक्षण अधिगम के संसाधनों के प्रभावी उपयोग आदि में महत्त्वपूर्ण विश्लेषण की आवश्यकता है।,
  - **भाषा की बाधाएं** : यदि राष्ट्रीय स्तर पर इस तरह के कार्यक्रम या सम्मेलन रखे जाते हैं तो भाषा एक बहुत बहुत बड़ी बाधा है। क्योंकि प्रत्येक राज्य की अपनी एक भाषा है जिसे दूसरे राज्य का शिक्षक नहीं समझ सकता जैसे कि हरियाणा के शिक्षक के लिए आवश्यक नहीं है कि वह मराठी, तेलगु या अन्य भाषा पढ़ या लिख सकते हैं।

निष्कर्ष

शिक्षक, संस्था के साथ–साथ पूरे देश के विकास के लिए व्यावसायिक विकास की आवश्यकता है। शिक्षा के हर क्षेत्र में शिक्षकों के सामने कक्षा में तैयार राष्ट्र का भविष्य। इसलिए, एक शिक्षक को विषय क्षेत्र, उनके विशेष विषय में नए रुझान, प्रौद्योगिकी और रणनीतियों में नए रुझानों के बारे में ज्ञान होना अति आवश्यक है। शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों को आयोजित करना सरकार और संस्थानों की जिम्मेदारी है और उनमें भाग लेना शिक्षक का कर्त्तव्य भी है।

संदर्भ ग्रंथ

- भारतीय विश्वविद्यालय संघ (2005), ''टीचर एजुकेशन इन दि नालेज इराः इश्यूज, ट्रैण्ड्स एंड चैलेज्स'' यूनिवर्सिटी न्यूज – एक वीकली जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन, खंड 43, सं. 18।
- आनन्द, आरती (2011), 'एन इवैल्यूएटिव स्टडी ऑफ टीचर ट्रैनिंग प्रोग्राम ऑफ एलीमेंटरी टीचर्स', शिक्षा में पीएच.डी., शोध ग्रंथ, शिमला हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय।
- एस.के. मंगल (2012) गणित शिक्षण, टंडन पब्लिकेशन्स।

- बीकाज और ट्रेसका (2014)। शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ने में शिक्षक पेशेवर विकास का प्रभाव, अंतः विषय अध्ययन की अकादमिक पत्रिका, 3(6), 369–377
- https://www.raijmr.com/ijre/wp-content/uploads/2017/11/IJRE_2012_vol01_issue_01_04.pdf
- https://testbook.com/objective-questions/mcq-on-in-service-teacher-education--5fc43129a1bc541cc2fff225/amp
- https://www.meraevents.com/blog/importance-of-professional-development-for-teachers